काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ।।१०।।

कामम्=विषय-तृष्णा का; **आश्रित्य**=आश्रय लेकर; **दुष्पूरम्**=कभी न पूर्ण होने वाली; **दम्भ**=गर्व; **मान**=मिथ्या अहंकार; **मदान्विताः**=मद से युक्त हुए; **मोहात्**=मोहवश; **गृहीत्वा**=ग्रहण करके; **असत्**=क्षणभंगुर; **ग्राहान्**=वस्तुओं को; **प्रवर्तन्ते**=कर्म करते हैं; **अशुचिव्रताः**=भ्रष्ट व्रतों वाले।

अनुवाद

ये असुर कभी न तृप्त होने वाले काम, दर्प और मिथ्या अभिमान का आश्रय लेकर मोहवश क्षणभंगुर पदार्थों में आसक्त हुए दूषितकर्म का व्रत धारण किए रहते हैं।।१०।।

तात्पर्य

यह आसुरी स्वभाव का विवरण है। असुरों की विषय-तृष्णा कभी शान्त नहीं होती, विषयों को भोगने की इच्छायें सदा बढ़ती ही जाती हैं। क्षणभंगुर वस्तुओं की आसक्ति उन्हें सदा चिन्तामग्न रखती है; परन्तु फिर भी मोहवश वे इन्हीं क्रियाओं में लगे रहते हैं। अज्ञान के कारण वे कभी नहीं जान पाते कि हम भ्रष्ट पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। ये असत्-ग्राही असुर अपने देवता, अपनी ही आराधना और अपने ही मन्त्रादि की कल्पना कर लेते हैं। परिणाम यह होता है कि वे कामिनी-काँचन में उत्तरोत्तर अधिक लिप्त होते जाते हैं। इस सन्दर्भ में **अशुचिव्रताः** शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण है। असुरों के आकर्षण के केन्द्र मदिरा, माँस, द्युत और कामिनी ही हैं। वस्तुतः ये उनके अशुचि, अर्थात् दूषितव्रत हैं। वे गर्व और अभिमान से प्ररित होकर वैदिक-विधान के विरुद्ध धर्म के सिद्धांतों की रचना किया करते हैं संसार में परम अधम होते हुए भी दम्भ से पूज्यभाव को प्राप्त कर लेते हैं; यद्यपि वे नरक में गिर रहे हैं, परन्तु फिर भी अपने को बहुत श्रेष्ठ समझते हैं।

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः।।११।।
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान्।।१२।।

चिन्ताम्=भय और चिन्ताओं को; **अपरिमेयाम्**=अपार; **च**=तथा; **प्रलयान्ताम्**=मरणकाल तक; **उपाश्रिताः**=आश्रय करके; **कामोपभोगपरमाः**=इन्द्रियतृप्ति को जीवन का परमलक्ष्य मानने वाले; **एतावत्**=इतना ही है; **इति**=ऐसा; **निश्चिताः**=मानने वाले; **आशापाशशतैः**=आशारूप हजारों बन्धनों में; **बद्धाः**=बँधे हुए; **कामक्रोधपरायणाः**=सदा काम क्रोध के परायण; **ईहन्ते**=चेष्टा करते हैं; **कामभोगार्थम्**=विषयभोग के लिए; **अन्यायेन**=अन्यायपूर्वक (जैसे चोरी से); **अर्थ**=धन के; **संचयान्**=संचय के लिए।